VOL- VI ISSUE-XII DECEMBER 2019 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 5.707 ISSN 2349-638x

साहित्य में किसान जीवन की त्रासदी

प्रा.डॉ. व्ही.सी. ठाकुर

साहित्य यात्रा में उपन्यास परम्परा का बड़ा महत्व पूर्ण स्थान हैं | भारतेंदु युग में बंगला उपन्यास का प्रभाव रहा | द्विवेदी युग में 'परीक्षा गुरु' से 'भाग्यवती' १९३६ से १९४७ के कालखण्ड को आधुनिक काल के उत्तरार्ध को मानते हैं | ऐसा माना जाता है कि प्रेमचंद के पूर्व कृषक जीवन जीनेवाले किसान के जीवन को रेखाकित करनेवाले बहुत बड़े पैमाने पर कोई रचना देखने को नहीं मिलती | लेकिन यह भी सच हैं कि, १९०८ में द्विवेदी युग में क्या महावीर प्रसाद ने अर्थ शास्त्र पर आधारित 'सम्पत्तिशास्त्र' पुस्तक वही लिखी थी ? इस पुस्तक में कृषि क्षेत्र से सम्बन्धित परेशानी, यातना नुकसान, किसान कि तबाही का जीता-जागता चित्रण किया गया था | इस निबंध में अंग्रेजों पर सरकार भी थी कि, हिन्दू स्थान की जमीन रहकर भी अंगेज लोग (सरकार) महसूल के नाते शोषण करते हैं | साम्राज्य के विरोधी और सामन्ती विरोधी दोनों विरोधों के प्रकारों को हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग अच्छी तरह जनता हैं, पहचानता हैं |

आचार्य द्विवेदी ने कहा था, " हमारी ७० प्रतिशत आबादी किसानों की हैं | कई जगहों पर महवीर प्रसाद मजदूरों और किसानों को मिलकर लड़ने की बात करते हैं | द्विवेदी ने कहा भी था कि यदि कृषक लग़ान देना बंद करेंगे तो राजा-महाराजाओं के सरकार के शासन कि दुर्गति हो जाएगी पहली बार 'हंस' पत्रिका में प्रेमचंद ने 'महाजनी सभ्यता'इस लम्बे लेख में कहते हैं कि " हमारा समाज दो भागों में बंटा हसा हैं, एक खेत-खलियान में मरने-खपनेवाला है दूसरा बहुत छोटा हिंसा उन लोगों का है जो अपनी शक्ति प्रभाव के कारण एक बड़े समुदाय को अपने वश में किए हुए हैं | क्या आज भी देश आजादी के ७०-७५ साल हो गये हैं | दो भागों में बंटा हुआ समाज नहीं दिखाई देता | आज किसानों की आत्महत्याओं को रोकनेवाला कोई मसीहा हैं | सब अपने-अपने स्वार्थ के गटजोड़ में व्यस्त हैं |

प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को कलात्मकता तथा जन जीवन की समस्याओं से जोड़ा | प्रेमचंद जिस क्षेत्र के किसान समाज का चित्रण कर रहे थे, वहीं जमींदारी प्रथा थी | किसानों के शोषण का यथार्थ चित्रण प्रेमचंद के 'प्रेमाश्रम' में प्रस्तुत किया गया हैं | इस उपन्यास में समस्या भी है और हल भी स्वाधीनता आंदोलन को दूर करने के लिए उसे एक नई गति देणे के लिए किसान समस्याओं को आजादी की मूल समस्या के रूप में स्वीकार करने में बहुत बड़ा काम किया हैं |

पुलीस और साम्राज्यवाद के अन्य यंत्रों द्वारा सामंती व्यवस्था को किस तरह क्षति पहुँचाता हैं, इसका भी चित्र इन्होने इस उपन्यास में बड़े अच्छे ढंग से बताया हैं | 'कर्मभूमि' में तो जमीन की समस्या हैं | लगान कम करने की समस्या हैं | इस उपन्यास में भी जनता की साम्राज्य विरोधी भावना को रेखांकि किया हैं | कृषि प्रधान गाँव को उजाड़ कर औद्योगिक केंद्र बनाने में भारत के राज्यों तथा राजाओं ने अंग्रेजों का किस प्रकार साथ दिया है | इसको भी दिखाया है | एक भारतीय कृषक कि दीन-हीन दशा का चित्रण प्रेमचंद के गोदान में दिखाई देता हैं | 'होरी' के चित्रण में वे यथार्थवादी दिखाई देते है | किसान के शोषण की समस्या का चित्रण हैं | कड़ी मेहनत, हमेशा परेशानियों का सामना दैन्य अवस्था आकांक्षाओं की आपूर्ति यही होरी का जीवन, हमारे आजाद भारत के किसान का जीवन हैं |

होरी एक जगह कहता हैं कि कर्ज वह मेहमान हैं जो एक बार आने के बाद जाने का नाम नहीं लेता | तीनों स्तरों के किसान प्रेमचंद युग में 'गोदान में दिखाई देते हैं | पहले में जिसके पास जमीन जोतने का अधिकार था | पर खेती नहीं करते थे | दुसरे में किसान थे पर जमीन जोतने का अधिकार नहीं था | दुसरे के खेती पर काम करते थे इन्हें ही खेती हार मजदूर कहा जाता था | तीसरे किसान वे थे जो जिनके पास जमीन जोतने का अधिकार था | वह स्वयं अपने खेती में काम करते थे और लगान देते थे | 'दातादीन' पहले श्रेणी में आनेवाला किसान हैं |

प्रेमचंद परम्परा के उपन्यासकारों में जीवन के बहु आयामी यथार्थ चित्रण को वाणी दी हैं | जिनमें चतुरसेन शास्त्री प्रतापनारायण मिश्र, श्रीवास्तव, वृदावनलाल वर्मा, जैनेन्द्र कुमार, भालचंद्र जोशी आदि | श्रमिक वर्ग किस प्रकार अपना भरण-पोषण करता हैं | उनकी दयनीय स्थिति का चित्रण प्रेमचंद युग में किया हैं | इसी परम्परा को आगे बढ़ानेवाले उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर, रांगेय राघव हैं | जिनके उपन्यासों की कथावस्तु ही किसान के इर्द-गिर्द घुमती हुई हम

देख सकते हैं | रांघेय राघव के उपन्यास 'विषाद मठ' में बंगाल दुर्भिक्ष और कलकता शहर के पीड़ित किसानों की स्त्रियाँ अपने बच्चों को सडक पर छोड़ देती हैं | स्वयं कलकता के चकला घरों में अपनी भूख शांत करने के लिए शरण लेती हैं| किसानों को जमीदारी की गुलामी शोषण, महजान का सूद, मजदूरों भिखारी बन जाना | क्या नहीं हैं इसमें ?

अमृतलाल का महाकाल उपन्यास किसान अपनी धानों फसलों को बे-भाव बेच देते हैं | कपड़ा-लत्ता दो समय का भोजन के लिए अपने आप को बेच देना ? स्वतंत्रा प्राप्ति के बाद किसानों के जीवन से सम्बन्धित उपन्यास लक्ष्मींनारायणलाल जिने 'धरती की आँखे' लिखा था | जिसमें जमीदार और किसान के आपसी सम्बन्धों का चित्रण हैं | नागार्जुन का 'बलचनमा' किसान आंदोलनों को बखूबी से बताया गया हैं | इस उपन्यास में निर्धन खेतिहार, निम्नवर्गीय किसान प्रमुख रूप से हैं | फणीश्वर नाथ रेणु जी का 'मैला आँचल' जमींदारी उन्मूलन, भूमिका समस्या बदलते गाँव का भी चित्रण देखने को मिलता हैं | उनका दूसरा उपन्यास 'परती परिकथा' में स्वाधान्न की समस्या हैं | जिसके कारण हरित क्रांति को खोजना पड़ा हैं | भारत में जब पहली पंचवार्षिक योजना बनी तब कहीं जाकर कृषकों को महत्व दिया गया | हिंदी उपन्यासों में रामदरश मिश्र जी का 'पाने के प्राचीर' है जिसमें बाढ़ और ऋण की समस्या हैं | सुखा को दिखाया गया हैं | ग्रामीण किसानों को निर्धन होते दिखाया हैं | फसल बर्बादी चोरों की लुट क्या कम थी?

डायरी शैली में लिखा गया विवेकी राय का उपन्यास 'बबूल'भी आज जाता हैं | बाढ़ और सुखों के कारण लोगों को मजदूरी नहीं मिलती हैं| इसी कारण बड़े-बड़े शहरों में किसानों का पलायन होते दिखाई देता हैं | शिवप्रसाद सिंह जी का उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' उत्तर प्रदेश ग्रामीण जीवन के किसानों को अपनी जमीन स्वयं जोतते दिखाया हैं| इसी कड़ी में आ जाता हैं | रामदरश मिश्र का उपन्यास 'जल टूटता हुआ ' लिखा गया | इसमें बाढ़ की भयावहता हैं | किसानों की दयनीय ता का चित्रण हैं | जनजातीय खेती करनेवाले किसान शान्ति जी का उपन्यास 'शाल वनों के द्वीप ' जो पहाड़ी मदिया गोड जाति पर आधारित माना जाता हैं | 'धरती धन न अपना' किसानो के हाथ होते है | कर्जों में फंसता जीवन किसानों की दयनीय स्थिति 'भूमिहीन मजदूर कभी न छोड़े खेत की कथा, अर्ध सामंती समाज के किसान जीवन के बिखरते तानों-बानों का चित्रण है | 'मुट्ठी बहर कांकर उपन्यास में शरणार्थियों को बसने के लिए खेती का उपजाऊ जमीन का अधिग्रहण हैं | घास गोदाम में शहर के करीब के गाँव का उजड़ना भैरव प्रसाद गुप्त का उपन्यास 'गंगा मैया सती मैया' जमीदारों को और किसानों का संघर्ष चित्रण हैं|

राही मासूम रजा का उपन्यास 'आधागाँव' में किसानो के बिखरते जीवन का चित्रण हैं | अज भारतीय कृषि और किसान दोनों संकट ग्रस्त नजर आते हैं | आज का होरी आये दिन आत्महत्या कर रहा हैं | पूंजीपतियों ने और बिल्डरों ने अपने स्वार्थ के लीये जमीनों का अधिग्रहण बढ़ाया हैं | स्मार्ट सिटी के नाम पर खेत-खलियान बेचे जा रहे हैं | साहित्य में किसान/ मजदूर के जगह बड़े-बड़े विमर्श पनपने लगे हैं | शोषण करने वाले की चलती दिखाई दे रही हैं | शोषकों की आवाजे दबाई जा रही हैं | वीरेंद्र जैन ने 'डूब' उपन्यास लिखा | बेदखल, वाहीघर श्याम बिहारी का उपन्यास 'पेल' में पालम जिले का आकाल का चित्रण हैं | जिस काल का उपन्यास 'एक बीघा जमीन' में चकबंदी और सीमांत की कथा हैं| कुर्मेदू शिशिर का उपन्यास 'बहुतल्पीराह' २००३ बहुत चर्चित रहा | भूमिहीन खेतिहर मजदर म्हणतो की व्यथा हैं|

राजू शर्मा ने 'हलफना में' उपन्यास लिखा | किसान आत्महत्या के साथ जलसंकट चित्रण इसमें हैं|म सूर्यदीन यादव के ' जमीन' उपन्यास में जमीन आधार बनाकर दो अंचल का चित्रण दिखाया हैं | 'माँ का आंचल ' को तो गुजरती साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हैं (१९९२) | इसमें किसान जीवन की विडम्बना हैं | शिवमूर्ति ने आखिरी छलांग में उदारीकरण के नीतियों ने किसानों को किस प्रकार बर्बाद किया हैं | सुनील चतुर्वेदी ने उपन्यास 'कालीचाट' में खेती का कम्पनी कारण को दिखया हैं | कर्ज आत्महत्या, बाजारवाद, बिचौलियों का चित्रण इसमें हैं | संजीव का उपन्यास 'फांस' विदर्भ किसानों की आत्महत्या चित्रण हैं | पंकज सुबीर का उपन्यास 'अकला में उत्सव' कर्ज की समस्या हैं |

उपन्यासों में कृषकों की समस्याओं आर दयनीय कृषको का बोल-बाला कभी कम होने नहीं दिखाई दे रहा हैं |

संदर्भ–

१. हिंदी साहित्य : उदभव विकास –महावीर प्रसाद द्विवेदी
२. प्रेमचंद-गोदान
३. नागार्जुन-बलचनमा
४. प्रेमचंद उनका युग–रामविलास शर्मा
५. पांडये मैनेजर– हिदी निदेशालय, दिल्ली